जल को आबाद करो

जल को आबाद करो

जिससे हरी-भरी धरती है,
सागर की ऊँची लहरें हैं ।
लगातार बहती हैं नदियाँ,
सम्पूरित जिससे नहरें हैं ।

वह जल है, सबका निर्माता,
सबके जीवन की धड़कन है ।
वह तरूणाई की शोभा है -
वत्सलता मय वह बचपन है ।

संस्कार सभी जग-जीवन के -
पावन जल पर ही निर्भर हैं ।
बंजर होती इस दुनिया में,
जीवन के जल के निर्झर हैं ।

कोई रोग नहीं है ऐसा -
जिसकी जल से मुक्ति न होवे ।
कोई सागर नहीं कि जिसमें,
मुक्ता वाली शुक्ति न होवे ।

ऐसे जल को नमन करो सब,
मत उसको बरबाद करो रे ।
जगह-जगह तालाब बना कर
जल को फिर आबाद करो रे ।

बूँद बूँद से सिन्धु

हम धरती के वासी मानव,
प्रगति पंथ पर पाँव हमारे ।
आगत कल तक पहुँच जायेंगे,
चाँदी के चन्दा के द्वारे ।

वन्य दशा के भूले दिन से -
अंतरिक्ष युग के इस पल तक ।
कदम-कदम पर साथ रहे जो,
याद उन्हें हम करते भरसक ।

भूख-प्यास के पहले साथी -
याद हमें पाषाण नुकीले ।
वे सरिता तट याद हमें हैं,
जहाँ बने हम प्रथम कबीले ।

माँग भरी क्वाँरी धरती की,
और सभ्यता का शिशु पाया ।
राजतिलक कर रखवालों को
हमने खलिहानों' में गाया ।

खलिहानों का होना, निर्भर -
पानी पर रहता आया है ।
पानी से ही मिली जिन्दगी -
फिर उसने पोषण पाया है ।

पानी नहीं रहा तो भाई,
दुनिया कैसे रह पायेगी ।
अगणित मंजिल वाली यह -
जगत-इमारत ढह जायेगी ।

पानी की बरबादी रोको,
मानव रख लो अपना पानी ।
सबसे बड़ी बुद्धि पाई है,
विज्ञानी तुम तत्व-ज्ञानी ।

निर्वन दुनिया को कर दोगे -
वह निर्जन भी हो जायेगी ।
जल-थल में हो, जड़-चेतन में,
सकल जिन्दगी खो जायेगी ।

बूँद-बूँद से सिन्धु बना लो,
सिन्धु को नहीं बिन्दु कर डालो ।
पावन सरित सलित को भाई,
घातक विषमय मत कर डालो ।

जल का सहज प्रबंधन सीखो,
जैसे हो रोको बरबादी,
घर-घर जाकर अलख जगाओ,
संकट रहित करो आबादी ।।

बादल

उमड़ घुमड़ कर आए बादल
छाए नभ के ऊपर,
लगे मचाने शोर जोर से
बिजली को चमकाकर

सभी ओर अंधियार छाया
छुपा कहीं पर सूरज,
छिटक पड़ी बादल से बूँदे
तज कर सारा धीरज,

लगी झड़ी फिर बहुत देर तक
बरसा जम कर पानी,
सौंधी गंध उठी माटी से
ऋतु भी हुई सुहानी,

मन में खुशियां भर देते हैं
जब भी आते बादल,
तपन मिटा कर शीतल करते
धरती माँ का आँचल

संपर्क करें:
डॉ. परशुराम शुक्ल विरही
भारतीय विद्यालय मार्ग
देवीपुरम् शिवपुरी (म.प्र.)
दूरभाष 07492-223133
मो.न. 8989007999